*Aadunik Kahaniyon Me Samajik Pariprekshy. Yogyatha International Research Journal, ISSN 2348-4225- December 2023.

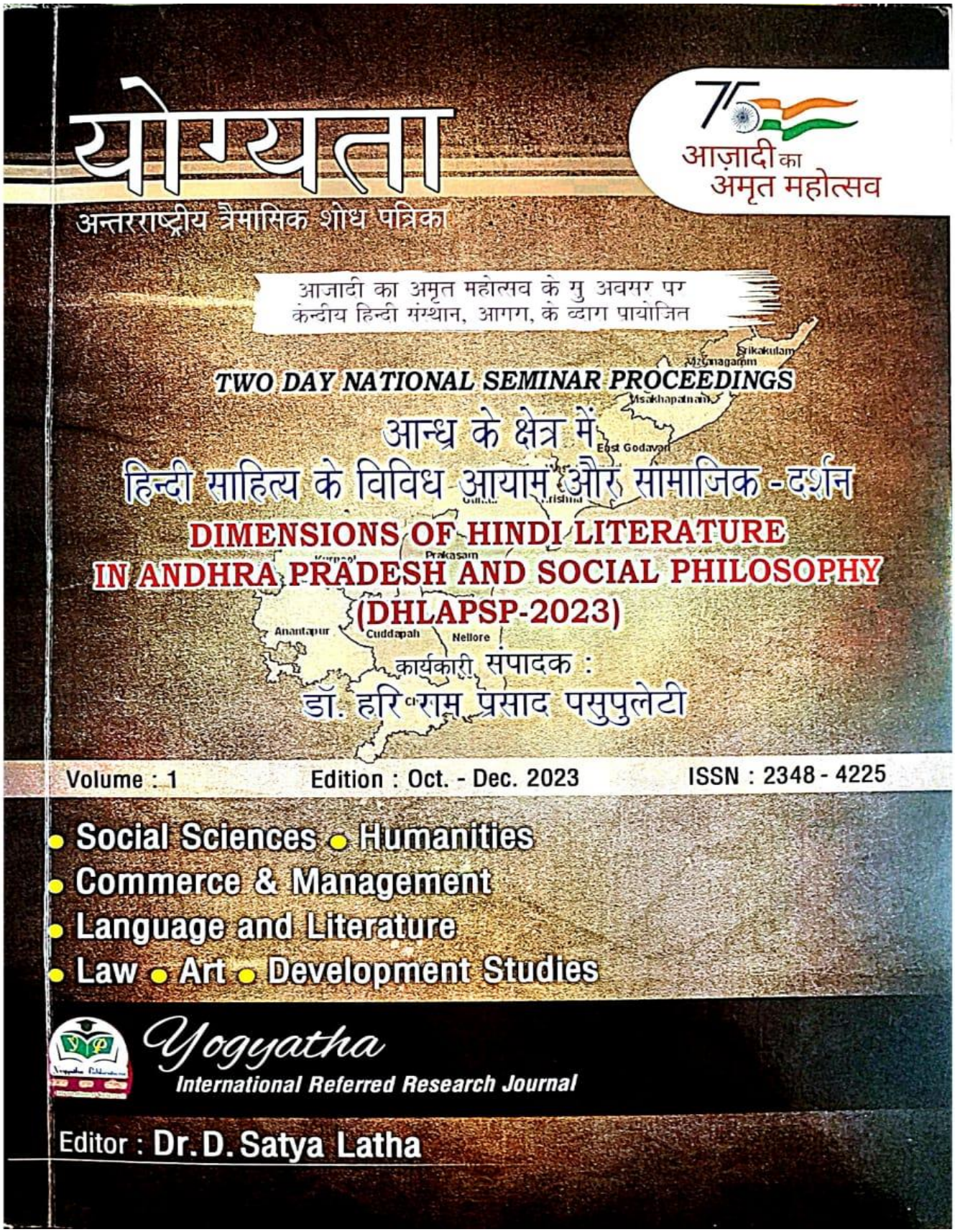

आज़ादी का अमृत महोत्सव

CENTRAL INSTITUTE OF HINDI : AGRA

Certificate

This is to certify that Sri / Smt / Dr. / Prof. A. Swathi

of A.S.D. Women's college, Kakinada has participated in the National Seminar on "ANDHRA KE KSHETRA ME HINDI SAHITYA KA VIVIDHA AYAM AUR SAMAJIK DARSHAN" Conducted by Departments of Hindi, Philosophy & English in collaborated with CENTRAL INSTITUTE OF HINDI : AGRA during 7 - 8 December 2023 at P.R.Government College (Autonomous), Kakinada

He / She has acted as resource person / presented a paper entitled _____

_____

Dr. GANGADHAR WANODE	Dr. B.V. TIRUPANYAM	Sri K. ANJANEYULU	Dr. P. HARI RAM PRASAD	Kum. CH. VENNILA
Regional Director	Director	Co-ordinator	Convenor	Co-Convenor
CENTRAL INSTITUTE OF HINDI	& Principal	& Vice Principal	Head, Dept. of Hindi	Head, Dept. of English
Hyderabad				

अनुक्रम

कम सं	विषय	नाम
1.	आंध्र के क्षेत्र में हिन्दी साहित्य के विविध आयाम और समाज – दर्शन	– आचार्य आर एस सर्मजु
2.	आंध्र के महान कवि आलूरी बैरागी जी	- आचार्य वी सुभा
3.	हिन्दी साहित्य के मूल्यों की अभिव्यंजना	- आचार्य एन सत्यनारायण
4.	कुसुमा धर्मन्ना की कविताओं में अंबेडकरवादी चेतना	- डॉ जी वी रत्नाकर
5.	आंध्र प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता	- डॉ पेक बेनजीर
6.	आचार्य पी आदेस्वर राव की कविताओं में व्यक्ति और समाज	- डॉ के श्यामसुंदर
7.	वीरशैव संप्रदाय के प्रयोगवादी तेलुगु कवि पी सोमनाथ	- डॉ डी सत्यलता
8.	वालशौरी रेड्डी कृत – जिंदगी की राह उपन्यास में नारी	- डॉ के अनीता
9.	आंध्र प्रदेश के महान हिन्दी प्रेमी	- डॉ आर श्रीदेवी
10.	ध्येय समर्पित हिन्दी साहित्यकार आचार्य एस ए एस एन वर्मा	- डॉ पी के जयलक्ष्मी
11.	मध्यकालीन हिन्दी साहित्य की आन्ध्रों की देन	- डॉ के नीरजा
12.	कथा साहित्य और सामाजिक मूल्य	- एन वी एन वी गणपतिराव
13.	डॉ वालशौरी रेड्डी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	- डॉ एस सुरेन्द्र
14.	साहित्य और सामाजिक मूल्य	- एन हरी प्रसाद
15.	दक्षिण के प्रमुख कवि आचार्य पी आदेस्वर राव	- डॉ एन वेंकट रमण
16.	साहित्य के धनी डॉ वलशौरी रेड्डी	- डॉ एस सूर्यावाती
17.	कहानियों में सामाजिक मूल्य	- ए स्याति
18.	आचार्य पी आदेस्वर राव की कविताओं मे नारी – सौंदर्य	- डॉ के कृष्ण
19.	साहित्य का सामाजिक शासत्र	- अमृता श्री मानेपल्ली
20.	हिन्दी साहित्य सेवा में आलूरी बैरागी चौधरी	- डॉ श्रीलता
21.	आलूरी बैरागी के कविताओं में व्यक्ति और समाज	- सी एच सुनील कुमार, डॉ पी हरीरम प्रसाद
22.	डॉ वलशौरी रेड्डी के उपन्यासों का विहंगावलोकन	- वी तिरुमलदेवी
23.	समाज ,साहित्य और संस्कृति का अंतर संबंध	- जी गोवर्धन
24.	हिन्दी साहित्य का क्षेत्र में आन्ध्रों का समकालीन जीवन	- के पृथ्वी
25.	साहित्य और समाज	- एस रम्या , पेक प्यारी
26.	कविवर डॉ पी आदेस्वर राव	- राधा कुमारी
27.	साहित्य और सामाजिक मूल्य	- मडिकी स्वरूपा प्रवीण

कहानियों में सामाजिक परिप्रेक्ष्य

ए. स्वाति
हिंदी प्राध्यापक,
ए.एस.डी गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज(w),(A),
काकिनाडा , आंध्र प्रदेश.

समाज और साहित्य, दोनों ही मानव संस्कृति के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। इन दोनों के बीच संबंध गहरे और अभिन्न होते हैं। समाज में जाति वर्ग ऐसे कई विभाग रहते हैं। इन सब के अलग-अलग आचार विचार और नैतिकता के अलग-अलग मापदंड है। इस स्थिति में संपूर्ण मानव जाति की भलाई और संपूर्ण मानव जाति का एक नैतिक मान का उज्जवल सपना सामाजिक चेतना से ओतप्रेत कोई लेखक ही देखने का साहस करेगा। मिथिलेश्वर जी वर्ग्गत और समाजगत विषमताओं के बीच में भी संपूर्ण समाज की भलाई और पूरे समाज के लिए एक नैतिक मान का सपना देखने वाला रचनाकार है। सामाजिक सदृढ़ता एवं विकास में गहरी आस्था रखने वाला साहित्यकार, मानव जाति के प्रगति अभियान में मशाल वाहक वन जाता है। आज तक के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास के फलस्वरूप मानवता अब जिस नये धरातल पर पहुंच गई है, उसे उसी धरातल पर टिके रखने के लिए मनुष्य की सद्वृत्तियों को प्रोत्साहित करना है। मनुष्य में जो पश्चिकथा है, जो तमस श्रुति है उनके दामन करने में या उन्हें काबू में रखने में सहायता प्रदान करना सामाजिक प्रतिबद्धता रखने वाले लेखक का कर्तव्य है। इस कर्तव्य को निभाते समय जीवन के घोर यथार्थ से या जीवन के वीभत्स रूप से मुह मोड़ना अपने कर्तव्य और ईमानदारी के प्रति बेईमानी माने जाएगी। मिथिलेश्वर ने अपनी कहानी यात्रा में कहीं भी इस प्रकार की बेईमानी नहीं की है।

प्रस्तावना

समाज संगठन की दृष्टि से आज का मानव समाज पहले से ही कहीं अधिक न्याय पर जोर देता है। ऐसी स्थिति में सामाजिक अन्याय और उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाना समकालीन लेखकों का फर्ज बन जाता है। इस प्रकार करने में जरूर लेखक की सामाजिक चेतना निहित रहती है। मिथिलेश्वर ने अपने कहानियों के माध्यम से सामाजिक अन्याय और उत्पीड़न के विरुद्ध अपना क्षोभ प्रकट किया है।

आलेख का मुख्य भाग

साहित्यकारों का अपने समय और समाज पर प्रभाव रहता है। समाज को पूर्ण रूप से बदलने की शक्ति शायद साहित्य में नहीं होती, लेकिन एक वदलाव के लिए समाज को तैयार कर लेने में साहित्य का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान होता है। मिथिलेश्वर जी सामाजिक परिवर्तन लाने में साहित्य को केवल एक साधन ही मानते हैं। उनकी रचना धार्मिकथा भी इसके अनुरूप रहती है। अनुभवहीन, विग्रह वावू, बोर होने से पहले जैसे कहानियों में मिथिलेश्वर जी ने जिन बातों की चर्चा की है, जिन स्थितियों की यथार्थ अभिव्यक्ति की है उनका गहरा प्रभाव समाज पर जरूर पड़ जाएगा पाठकों में एक विशेष बेचैनी पैदा करने में यह प्रभाव सफल बना है। अपने भविष्य के प्रति कभी आस्वस्थ ना रहने वाली एक पीढ़ी को और अधिक अनास्वस्थ कर देने वाली हैं ये रचनाएं। मिथिलेश्वर निम्न मध्य वर्ग के कथाकार होने के कारण उनके कहानियों में मध्यवर्ग की मानसिकता ही नहीं, मध्यवर्गीय मानोग्रस्तियां, दीनता, दासता और अवसदागुन, विडंबना सभी के संवेदनात्मक विंवन उपस्थित है। मिथिलेश्वर जी की संवेदना और चेतना दोनों प्रेमचंदीय स्तर की है। समसामयिक मध्यवर्गीय युव पीढ़ी के क्षोभ और आक्रोश के सशक्त वक्त के रूप में मिथिलेश्वर की गणना होती है। मध्यवर्गीय युवा पीढ़ी की आशा आकांक्षाओं, दुख दर्दों और वेचैनियों को उन्होंने वाणी दी है। मध्यवर्गीय नारी की स्थिति पर उन्होंने ध्यान दिया था। अंधविश्वास हो और रूढ़ियों के सतत विरोध के द्वारा मिथिलेश्वर की कहानियों ने समाज को प्रगति के मार्ग में अग्रसर होने में सहायता

पहुंचाई है। मिथिलेश्वर की अनुभवहीन कहानी उसी प्रवृत्ति की परिलक्षित होती है । मिथिलेश्वर जी मूलतः ग्रामीण जीवन के कथाकार के रूप में उभरे और प्रख्यात हुए हैं। गांवों के जीवन की अनुभूतियों ने ही मिथिलेश्वर के कथा साहित्य का गठन किया है। ग्रामीण जीवन को उसकी परिपूर्णता के साथ चित्रित करने का प्रयास मिथिलेश्वर ने किया है। दूसरा महाभारत, तिरिया जन्म, बोर होने से पहले जैसे कहानी संग्रहों में रिपोर्ताज की तरह सीधे सारे ढंग से गांव की दशा का बयान है। एक और हत्या कहानी में आर्थिक दृष्टि से विपन्न ग्राम वासियों की दुर्दशा का चित्रण है। रात अभी बाकी है कहानी में भारत के गरीब किसान के बारे में बताया। उनकी दूसरा महाभारत कहानी संग्रह पारिवारिक जीवन से ओतप्रेत है। हरि हर काका कहानी भी संयुक्त परिवार पर लिखी गई कहानी शेष जिंदगी संगीता बनर्जी बाबूजी नरेश बाबू ना चाहते हुए भी जैसे कहानियां नई जीवन से संबंधित है मिथिलेश्वर जी की कई कहानियां है उन सब की चर्चा हम यहां नहीं कर सकते हैं लेकिन मिथिलेश्वर के समस्त कहानी एक महत्वपूर्ण लक्ष्य की पूर्ति के साधन है वह है सामाजिक चेतना के द्वारा व्यक्ति चेतना का परिष्कार।

निष्कर्ष

मिथिलेश्वर के कहानियों का अध्ययन के बाद निसंदेह बता दिया जा सकता है कि उनका प्रत्येक कहानी सामाजिक बलाई को लक्ष्य करके लिखा गया है अपने यह में सफलता पाने के लिए उन्होंने समकालीन समाज का गहरा अध्ययन किया है अनुभूत साथियों के आधार पर पूरी ईमानदारी के साथ उन्होंने युग सत्य को वाणी दी है। मिथिलेश्वर की कहानियों में व्यक्ति और समाज को समान स्थान दिया है एक दूसरे से घटकर या बढ़कर प्रतीत नहीं होता।

संदर्भ ग्रंथ:

*साहित्य और आधुनिक युगबोध - देवेंद्र यादव
*भोर होने से पहले, एक गांव की अन्य कथा
*शेष जिंदगी, बाबूजी
*दूसरा महाभारत